जुलाई : 2018

ISSN 2278 - 6880

संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.श्रीलता. के
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
श्री.के.जनार्दनन नायर
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र)
डॉ.राजेन्द्रनाथ मेहरोत्रा, ग्वालियार (म.प्र.)

इस अंक में....

संपादकीय : कारगिल विजय दिवस	डॉ.वी.वी.विश्वम	5-6
मन की बात (४५वीं कड़ी)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
'आप्प' की लहरों में डँवाडोल युवा पीढ़ी	प्रो.टी.के.प्रभाकरन	14-18
ज़िन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात (धारावाहिक संस्मरण : कैद माँगी थी, रिहाई तो नहीं माँगी थी - ४)	प्रो.वी.डी.कृष्णन नंपियार	18-20
हिन्दी साहित्यिक विधाओं में पारिस्थितिक स्त्रीवाद	डॉ.षीला कुमारी.एल.	21-25
राजेश जैन के नाटक 'विषवंश' में चित्रित राजनैतिक चेतना	षीबा.सी.	25-27
इक्कीसवीं सदी का आइना : सबूत	सन्ध्या मेनन	28-30
शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में चित्रित स्ववर्ग संबंध	पावना.सी.	31-32
'शब्द झूठ नहीं बोलते' में अभिव्यक्त प्रकृति	दीपा.आर.एस.	33-35
पारिवारिक संबंध - विघटन का दस्तावेज - दोहरा अभिशाप	प्रिजी.एम.पी.	35-38
नारी उत्पीडन के नये विकल्प : उदयप्रकाशजी की कहानियों के संदर्भ में	डॉ.आतिरा.जे.एस.	39-42
समकालीन हिन्दी कहानी में राजनीति और भ्रष्टाचार	विष्णु तंकप्पन	42-46
आदिवासी जीवन एवं संघर्ष : मधुकांकरिया के उपन्यास 'हम यहाँ थे' के संदर्भ में	लक्ष्मी.जी.	47-50
काले कजरारे (लघुकथा)	डॉ.वी.गोविन्द शेनाय	50
पाठकों के पत्र		51
गुरु कौन? (कविता)	डॉ.एच.परमेश्वरन	52
फैसला (कविता)	किशनलाल शर्मा	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र : कारगिल विजय

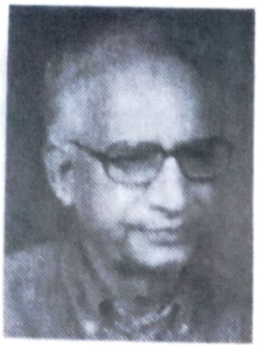

अरुण कमल

इक्कीसवीं सदी का आइना : 'सबूत'

सन्ध्या मेनन

"हर नदी का घाट श्मशान / हर बगीचा कब्रिस्तान / बन रहा है / और हम इक्कीसवीं शताब्दी की ओर जा रहे हैं।"[१]

यह एक डरावनी क्लपना मात्र नहीं, बल्कि आज के हमारे समाज और वक्त की हक़ीकत को बयाँ करती हैं कविवर अरुण कमल जी के 'सबूत' कवितासंग्रह की ये पंक्तियाँ। सन् १९८९ में प्रकाशित यह कविता संग्रह बावन छोटी - बड़ी कविताओं का पुंज है।

व्यक्तिगत और समष्टिगत सभी तत्वों और समस्याओं को इस संग्रह की कविताएँ अपने आंचल में समेटती जाती हैं। संग्रह की शुरुआत होती है जीवन के शाश्वत सत्य से कि इस नश्वर शरीर के खत्म हो जाने पर आप याद किये जाओगे तो सिर्फ़ अपने कर्मों के लिए :

"पर निशान तो रह ही जायेगा"[२]

'झड़ना' कविता अपने-आप में जीवन के व्यापक अर्थों को समेटे हुए है। इस कविता के माध्यम से कवि पुराने मूल्यों के जीर्ण होने के साथ ही नये मूल्यों की स्थापना का खयाल भी रखते हैं, देखिए कितना सजीव और मनोहर चित्र वे प्रस्तुत करते हैं।

"झड़ते तो हैं सभी वृक्ष/ कभी भी न वह बिल्कुल नया होता है/ न बिल्कुल पुराना/ झड़ता और उगता साथ-साथ"[३]

हमें अपनी परंपरा की जड़ों को हमेशा सींचते रहना है। उसी वृक्ष से प्रगति की नई -नई शाखाएँ उगेंगी जैसा कि कविवर कहते हैं:

"जो उठा रहे हैं नयी भित्तियाँ / उनके ही जिम्मे है खंडहरों को बचाने का भार / ये खंडहर मनुष्यता के चरण-चिन्ह"[४]

'हरा दस्ताना' को जब हम संजीदगी से पढेंगें तो कहीं न कहीं यह संदेश हमें नज़र आयेगा कि ज़िन्दगी में हमेशा अपने सहजीवियों के काम आयें। जो निर्बल है उसका बल बनें, मुश्किल घड़ी में उसका साथ निभायें। बिल्कुल इसी लत्तर की तरह जिसने ठूँठ को अपने भरे पत्तों से ढक लिया है

"शायद कभी गिरी थी बिजली इस पर / या कोई अज्ञात बीमारी खा गयी इसे / रह गया कंकाल केवल ठूँठ /...../ किन्तु आज मैं पहचान नहीं पाया ..... / पूरा का पूरा लत्तरों से लदा था वह ठूँठ/ ...../ अब तो वह ठूँठ हरा दस्ताना था/"[५]

अब 'बुढ़ापा' कविता को ही लीजिए। यह भी हर उस इन्सान को प्रेरित करती है जो यह सोचते हैं कि अब तो बुढ़ापा आ गया, हम बेकार हो गये। अब तो बस खाट पर बैठ के गरमागरम रोटियाँ खायेंगे और पोते-पोतियों को गोद में बिठा के परियों की

१. अरुण कमल, सबूत, पृ.सं. ७६
२. वही, पृ.सं.११
३. वही, पृ.सं.२८
४. मनुष गंध, पृ.सं. ३०
५. अरुण कमल, सबूत, पृ.सं. २९

₹ 30/-

साहित्य अमृत

फरवरी 2021 • साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक • मासिक • ISSN 2455-1171

Dr. Sandhya Meno

साहित्य अमृत

मासिक

माघ-फाल्गुन, संवत्-२०७७ ❖ फरवरी २०२१

❖ पृष्ठ ८४ यू.जी.सी.-केयर लिस्ट में उल्लिखित ISSN 2455-1171

पक संपादक
ानिवास मिश्र
~•~
मान संपादक
ोमल्ल सिंघवी
ी नाथ चतुर्वेदी
~•~
संपादक (प्रबंध)
यामसुंदर
~•~
ंध संपादक
ष कुमार
~•~
संपादक
ंकर वाजपेयी
~•~
क्त संपादक
ंत कुकरेती
~•~
प संपादक
ग्रवाल 'उर्वी'
~•~
कार्यालय
ली रोड, नई दिल्ली-०२
१-२३२८९७७७
४४८६१२२६९
amrit@gmail.com
~•~
शुल्क
ंक—₹ ३०
यों के लिए)—₹ ३००
कालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
यू.एस. डॉलर (US$4)
यू.एस. डॉलर (US$45)
~•~
स्वत्वाधिकारी पीयूष कुमार द्वारा
अली रोड, नई दिल्ली-२
डिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद
एरिया, साइट-IV,
२०१०१० द्वारा मुद्रित।
~•~
ाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं
लेखक के हैं। संपादक अथवा

✍ संपादकीय
वसंत को बुलाओ ४
✍ प्रतिस्मृति
दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी/ *आचार्य चतुरसेन* ६
✍ कहानी
सच्ची जीत/ *मंजु मधुकर* १०
साँकल/ भावना शेखर १८
मुखौटा/ *सुधांशु गुप्ता* २६
गुम होते क्रेडिट कार्ड्स/ *प्रगति गुप्ता* ३५
जाकी रही भावना जैसी/ *संध्या मेनन* ६४
✍ आलेख
हरित मानसिकता की जरूरत/ *गिरीश्वर मिश्र* १४
हिंदी और उर्दू ग़ज़ल'''/ *जहीर कुरेशी* २२
एक शहीद की दास्तान/ *ऊषा निगम* ३०
गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित कबीर-वाणी/ *मनमीत कौर* ४०
हिंदी ललित निबंध के समर्थ हस्ताक्षर पं. विद्यानिवास मिश्र/ *पूजा शर्मा* ६६
✍ लघुकथा
डायबिटीज / *माला वर्मा* १७
अँधेरा और रोशनी/ *मुकेश शर्मा* ५१
हैसियत का अहसास/ रामगोपाल राही ७७
✍ कविता
वासंती स्वर/ *भारतेंदु हरीश्चंद्र, सुभद्राकुमारी चौहान* ९
चुक जाती हैं जब इच्छाएँ/ *पुष्पा राही* १६
आभार तुम्हारा'''/ *संगीता शर्मा अधिकारी* २५
स्वर्ण बालियाँ झूम रहीं/ *होड़िल सिंह 'मधुर'* २९
सरस्वती वंदना/ *अंकुर सिंह* ३४
सरस्वती वंदना/ *बालकृष्ण गर्ग* ४५
कोई आश्चर्य नहीं/ जितेंद्र श्रीवास्तव ५२
खाली हो जाना/ संदीप राशिनकर ५३
प्रेम के रंग/ ममता चंद्रशेखर ६१
नए आक्रांत/ *सुरेश ऋतुपर्ण* ६२
लग रहा है ज्यों'''/ *तेजेंद्र शर्मा* ६५
✍ लोक-साहित्य
हिरनी-बिरनी लोकनाट्य/ *शंभू शरण सत्यार्थी* ७३
✍ राम झरोखे बैठ के
शिकारपुर और उसके वासी/ *गोपाल चतुर्वेदी* ३२
✍ संस्मरण
खिड़की से झाँकती वे सूनी आँखें/ *हरींद्र कुमार* २४
✍ ललित-निबंध
सखा धर्ममय अस रथ जाके/ *श्यामसुंदर दुबे* ४४
✍ साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
मुलाकात/ *गिरीश भट्ट* ४८
✍ व्यंग्य
ठेले पर वैक्सीन/ अशोक गौतम ५४
✍ पत्र-प्रसंग
महादेवी का मन/ राजशेखर व्यास ५६
✍ साहित्य का विश्व परिपार्श्व
गिटजे/ *कोनार्ड बसकेन हूट* ५९
✍ यात्रा-वृत्तांत
जनश्रुतियों का नगर चंबा/ देवी प्रसाद तिवारी ७०
✍ बाल-संसार
बिंदु का सवाल/ *पवन चौहान* ७६
✍ वर्ग-पहेली ७८

जाकी रही भावना जैसी

• संध्या मेनन

मंदिर में जब भी एक हफ्ते की भागवत होती है तो आसपास की महिलाओं को बड़ी ही खुशी होती है—सत्संग तो मिलेगा ही, एक हफ्ते तक खाना बनाने से छुट्टी, क्योंकि मंदिर में एक हफ्ते तक अन्नदान, वह भी तीनों टाइम। मकसद तो होता है कि भक्तजन बिना किसी सांसारिक चिंता के भगवत लीला गान सुनें, भगवान् के सान्निध्य में रहें। लेकिन देखने में तो यही आता है कि भागवत कथा के समय भीड़ हो न हो, अन्नदान का समय होते ही न जाने कहाँ से लोग आ जाते हैं और आएँ भी क्यों न, भगवान् का प्रसाद है, बड़े भाग्य वालों को मिलता है। हाँ, कुछ बड़ी-बूढ़ी महिलाएँ जरूर होती हैं, जो मन लगाकर सातों दिन कथा सुनती हैं, भजन भी गाती हैं और तृप्ति कथा सुनती हैं, भगवत प्रसाद भी ग्रहण करती हैं।

लेकिन एक है हमारी पड़ोसन भानुमती अम्मा, जिन्हें सब भानु अम्मा कहते हैं। सुबह-ही-सुबह नहा-धोकर डोलची हाथ में लिये पहुँच जाती हैं मंदिर भागवत सुनने। थोड़ा सुनती हैं, थोड़ा सो लेती हैं और अगर मिल जाए अपने जैसा कोई तो लग जाती हैं बहू की बुराई करने कि 'मैं जब घर से निकली तो मुझसे चाय हो भी नहीं पूछा।'

वह रचना काफी समझदार है। पिछली बार पंचायत चुनाव में खड़ी भी हुई, लेकिन बस थोड़े से ही वोटों से हार गई। तो चुनाव प्रचार के समय जब लोगों का उनके घर आना-जाना हुआ तो भानुमती अम्मा को रास नहीं आया और सभी के सामने रजनी को भला बुरा कह देती, लेकिन रजनी इतनी समझदारी से बात सँभाल लेती कि वे खुद ही चुप हो जातीं। खाने में जरा सी देर हो जाए तो हल्ला मचा देती थी।

'अरे इलेक्शन से फुरसत मिले तब तो खाना मिले।'

रजनी काजू फैक्टरी में क्लर्क थी घर का सारा काम कर, खाना-पीना बनाकर जाती थी। पिता की परचूनी की दुकान थी। वे और बच्चे अपनी माँ से काफी खुश थे। बस दिक्कत थी तो भानुमित अम्मा को। छुट्टी वाले दिन रजनी घर पर रहती तो पूरे दिन कमियाँ छाँटती रहतीं।

जमाने का ये न जाने कैसा दस्तूर है कि जो माँ ममता की मूरत होती है, जिसे अपने बेटे की लाख कमियाँ भी नजर नहीं आती, जो उसकी आँख का तारा होता है, लेकिन सास की पदवी पाने ही वो धैर्य, वो सहन शीलता, वो ममता, हर छोटी बड़ी गलतियाँ को माफ कर देने का बड़प्पन सब कुछ न जाने कहाँ खो जाता है। बेटा अगर अपनी पत्नी को प्यार करे तो उनसे सहा नहीं जाता जो कि जब वे स्वयं बहू थी तो उन्होंने अपने पिता से चाहा भी होगा।

कुछ लेख पत्रिकाओं और किताबों में प्रकाशित। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स और दर्शनशास्त्र से स्नातकोत्तर। केरल विश्वविद्यालय से हिंदी में पी-एच.डी.। संप्रति अतिथि व्याख्याता, के.एस.एम देवस्वम बोर्ड कॉलेज।

सास बनी माँ की छवि भी बड़ी निराली होती है जो बेटी को प्यार करते दमाद को देखकर फूली नहीं समाती और कहती है कि ये तो उनके पिछले जन्म के कर्मों का फल है जो उन्होंने ऐसा दमाद मिला है। वहीं बहू को प्यार करते अपने बेटे को देख असहनीय पीड़ा का अनुभव करती हैं।

जो भी हो रजनी बहुत ज्यादा पढ़ी लिखी तो नहीं थी, लेकिन समझदारी की बात वो ऐसी करती थी कि जिसका कोई सानी नहीं। कभी-कभी तो सूक्तियों में बात करती थी जीवन के अनुभवों से पगी हुई। कहतीं कि सभी लोग इस दुनिया में अपना-अपना कर्म काटेंगे। जो जैसा बोएगा वो वैसा ही फल काटेगा। घर का कोई भी फैसला हो तो उसका कहना होता कि 'जब भी मिट्टी पर पैर रखो तो जमा कर रखो। इधर-उधर मत भटको-लोगों की बातों पर ध्यान दिए बिना अपनी मंजिल पर नजर रखो तभी तुम मुकाम हासिल करोगे।'

एक अच्छी माँ के ही विचारों का फल था कि उसके बेटे को विदेश में एक अच्छी नौकरी मिल गई और बिटिया को बहुत अच्छा घर और दमाद और उसकी पढ़ाई भी जारी थी। भानुमती अम्मा काफी दिनों तक बीमार रहे। चलने-फिरने से लाचार बिस्तर पकड़ लिया जिस बहू को वो दिन-रात कोसा करती थीं आज बिस्तर पर पड़े-पड़े उसकी को पुकारती रहती थीं, "मेरी रजनी··· थोड़ी चाय पिला दे, रजनी बेटा खाना खिला दे।"

रजनी ने भी किसी चीज की कमी नहीं होने दी। भानुमती अम्मा खाट पर पड़े-पड़े मल-मूत्र विसर्जन करती। उनके रूम में प्रवेश करके लगता ही नहीं था कि किसी रोगी का कमरा है। रजनी कमरे को साफ-सुथरा और सुगंधित रखती थी जीवन के अंतिम छड़ों में काफी कुछ भुगतकर भानुमती इस दुनिया से विदा हुई।

रजनी का सुमनस उसकी आस्था, विश्वास, परिवार के प्रति उत्तरदायित्व और स्त्री सशक्तीकरण के सही अर्थ को समझता है। उसका

मई - जून : 2023

ISSN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

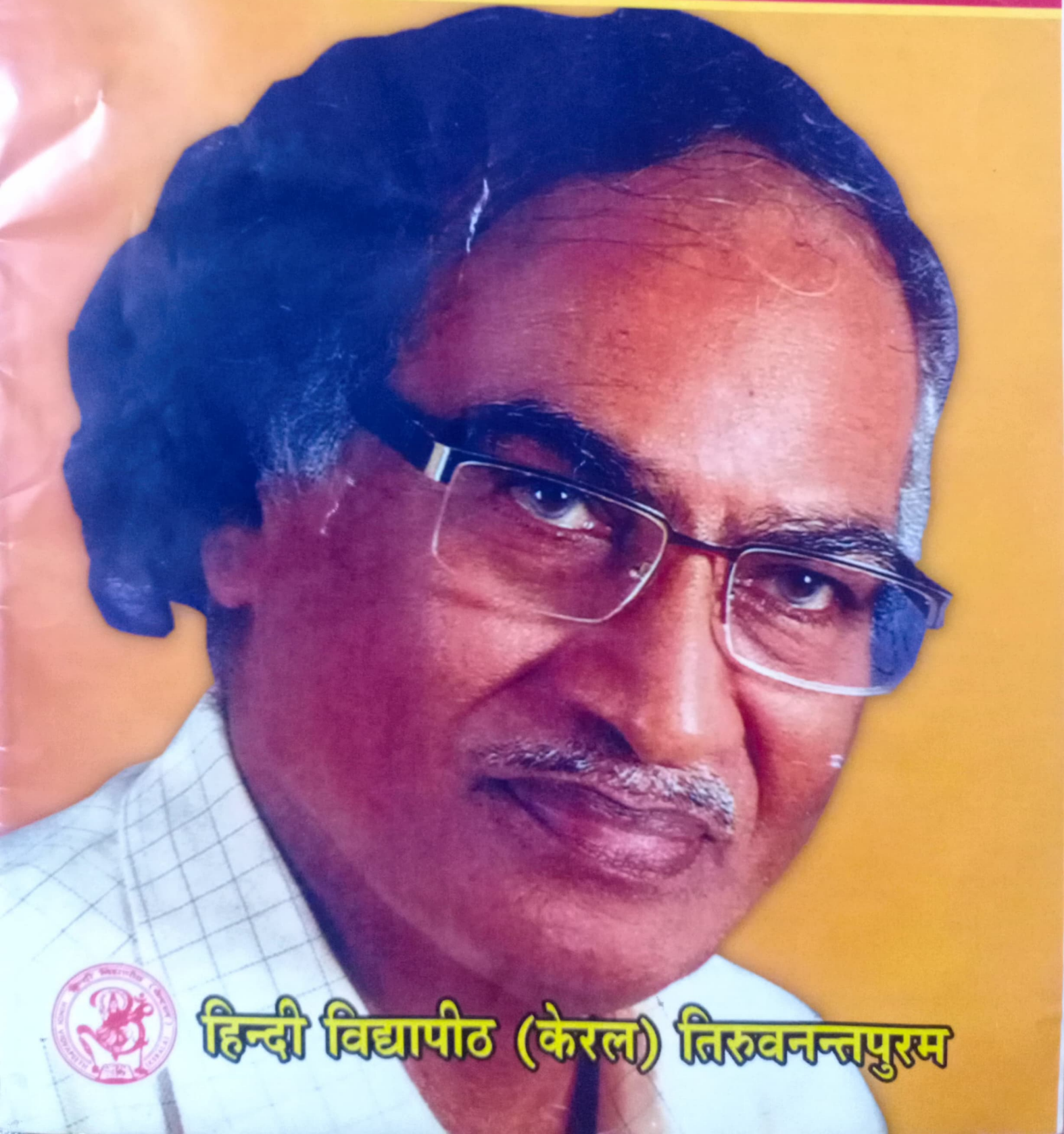

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलाँग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़ | प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै | श्री.के.जनार्दनन नायर
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी | प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ.श्रीलता.के | डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ. सुमा.एस | डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : पी.केशव देव पुरस्कार विजेता मलयाळम कवि श्री देशमंगलम रामकृष्णन	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (अप्रैल २०२३)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-14
प्रो.रघुनाथकृष्ण रावु	प्रो.हिल्डा जोसफ़	15-17
वर्धा से मिली वर्धित ऊर्जा की कविताएँ	डॉ.आरसु	18-20
सीता-काव्य के हिन्दी अनुवादकों में एक और नाम-निशान	डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन	21-22
काव्येषु नाटकं रम्यं : इक्कीसवीं सदी में भी	डॉ.संध्या मेनन	23-25
श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियों में संवेदना के विविध रूप : 'हाथ तो उग ही आते हैं' कहानी-संग्रह के विशेष संदर्भ में	शमीम.पी.	26-29
'हॉफ मैन' की पूर्णता	डॉ.राखी बालगोपाल	30-33
स्त्री और प्रतिरोध	डॉ.ब्रिजिट जोसफ	34
निर्मल वर्मा की रचना में प्रवासी जीवन	डॉ.षाजी.एन.	35-37
कबीरदास - साहित्यिक विशेषताएँ	षीना.वी.के.	38-40
अनामिका की कविताओं में चित्रित हाशिएकृत नारी	डॉ.जस्टी इम्मानुएल	41-43
रण्डिटङ्ङषि और छप्पर - दलित जीवन के दस्तावेज	डॉ.सिन्धु.एस.एल	44-47
तनाव के कारण एवं कारक	डॉ.स्मिता चाक्को	48-49
'दरमियाना' में किन्नर जीवन-संघर्ष	डॉ.जयश्री.एस.टी.	50-52
'उम्र के बढ़ते', 'झूठ की मजाल' - दो कविताएँ	डॉ.बाबु.जे.	53
'पहनूँ क्यों पायल मैं?' (मलयाळम अनुवाद) और 'मा निषाद' (मौलिक कविता)	के.जनार्दनन नायर	54

मुखचित्र - पी.केशवदेव पुरस्कार विजेता श्री देशमंगलम रामकृष्णन

काव्येषु नाटकं रम्यं : इक्कीसवीं सदी में भी

डॉ.संध्या मेनन

'काव्येषु नाटकं रम्यं' उक्ति प्राचीन काल से ही नाटक की महत्ता की सूचक है। भारत में ही नहीं दुनिया भर के साहित्य क्षेत्र में नाटक का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें सभी प्रकार के ज्ञान, विद्या, कला, शास्त्र और कर्म का समावेश है इसलिए नाटक को 'पंचमवेद' भी कहा गया है।

नाटकों का व्यक्तित्व बहुरंगी हुआ करता है। और अपने आविर्भाव काल से लेकर आज तक उसने अनेकों रंग बदले हैं। परम्परा को निभाया है तो नये प्रयोग भी किये हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से लेकर अब तक असंख्य नाटककारों ने अपने अनमोल नाटकों को प्रदान करके हमारे हिन्दी नाट्य साहित्य को समृद्ध बनाया है। मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, भुवनेश्वर, शंकरशेष, सिद्धनाथ कुमार, डॉ.देवराज, सुदर्शन मजीठिया, हबीब तनवीर, असगर वजाहत, नरेन्द्र कोहली, मृदुला गर्ग, मधु धवन, वर्षा दास आदि नाटककारों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

उल्लेखनीय बात यह है कि कालचक्र के साथ ही नाटकों के विषय भी थोड़े बदले हैं। नाटकों ने अपने आप को समाज के अनुरूप ढाल लिया है। 'जैसा देश वैसा भेष'- वैसे ही, जैसा समाज वैसा ही साहित्य। तो आज के नाटकों में भी वर्तमान समाज के यथार्थ-स्वरूप, संवेदना और समस्याओं का प्रतिबिम्ब झलकता है।

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी नाटकों के बारे में हम अगर चर्चा करें तो कमलेश्वर जी के कुछ बाल-नाटक जिनका मंचन भी वर्षों पूर्व हो चुका था, आकाश वाणी द्वारा भी प्रसारित किये जा चुके थे उनको सन् २००० में दिल्ली के प्रवीण प्रकाशन ने बड़े ही आकर्षित रूप में प्रकाशित किया था।

* सन् २०१५ में तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित नाटक है- 'अन्वेषी आर्यभट्ट'। नाटककार हैं- हरीश धवन। इन्हीं का लिखा एक और लघु व्यंग्य नाटक है-यमदूत का जाँच प्रतिवेदन (२०१५)

* डॉ.सुरेन्द्र दुबे का नाटक है - 'उठो अहल्या'

संस्कृतिक संगम, सलेमपुर, उत्तर प्रदेश के द्वारा इस नाटक का बड़ी ही कुशलता के साथ मंचन हुआ है। सन् २००५ में इस संस्था की स्थापना हुई थी इसके Founding Director हैं मानवेन्द्र त्रिपाठी।

एकल नाटक के क्षेत्र में थियेटर आर्टिस्ट विभा रानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ब्रेस्ट कैंसर के बावजूद अपनी हिम्मत और इच्छाशक्ति से उन्होंने साबित कर दिया कि हर मुसीबत का डट कर सामना किया जा सकता है। विभा जी लेखन अनुवाद और अभिनय कला में निपुण हैं। हर पात्र के अनुसार चेहरे पे भाव लाना उनकी प्रतिभा को दर्शाता है। इनके प्रमुख नाटक हैं- बिम्ब-प्रतिबिम्ब, मैं कृष्णा कृष्ण की, आओ, तनिक प्रेम करें।

* 'मैं कृष्णा कृष्ण की'

इस नाटक में पौराणिक कथा के धरातल पर यथार्थ नारी चेतना को